P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6 * ISSUE-5 * (Part-1) January- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

दक्षिणी राजस्थान में उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् जनजातीय बालिकाओं की वर्तमान स्थिति, समस्याओं एवं भविष्य में अवसरों का अध्ययन

सावित्री देवी मीणा
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान

सारांश

प्रस्तुत शोध आलेख कार्य का मुख्य उद्देश्य दक्षिणी राजस्थान में उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् जनजातीय बालिकाओं की वर्तमान स्थिति, समस्याओं एवं भविष्य में अवसरों का अध्ययन करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए दत्त संकलन हेतु उपकरण के रूप में बालिकाओं के लिए एक स्वनिर्मित व्यक्तिगत सूचना पत्रक का प्रयोग किया गया है। सर्वेक्षण विधि के अन्तर्गत कुल 320 बालिकाओं के न्यादर्श समूह; (160 ग्रामीण तथा 160 शहरी) पर इस उपकरण का प्रशासन किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष यह बताते हैं कि वर्तमान स्थिति के प्रत्येक पहलू यथा– शैक्षिक, पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में शहरी जनजातीय बालिकाओं की स्थिति ग्रामीण जनजातीय बालिकाओं की तुलना में सुदृढ़ पाई गई जबकि समस्याएँ ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक गंभीर पाई गई हैं। जहाँ तक जनजातीय बालिकाओं के लिए भविष्य में अवसरों का प्रश्न है, इस संदर्भ में शहरी क्षेत्रों की स्थिति ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में बेहतर प्राप्त हुई है।

मुख्य शब्द : दक्षिणी राजस्थान, उच्च शिक्षा, जनजातीय बालिकाएँ, वर्तमान स्थिति, समस्याएँ, भविष्य में अवसर।

प्रस्तावना

मानव के सर्वांगीण विकास के लिए उसका शैक्षिक विकास अत्यंत आवश्यक है। शैक्षिक विकास पर ही व्यक्ति का बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास निर्भर करता है। हमारे देश में विभिन्न प्रकार की जनजातियाँ निवास करती है जिनकी अपनी विशिष्ट संस्कृति है। अतः जनजातीय समुदायों का शैक्षिक विकास और भी चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

डी.एन. मजूमदार की परिभाषा के अनुसार, ''जनजाति परिवारों तथा पारिवारिक वर्गों का एक सामान्य नाम होता है। इसके सभी सदस्य एक सामान्य भाषा का प्रयोग करते हैं, एक निश्चित भू–भाग में निवास करते हैं तथा विवाह, व्यवस्था आदि में कुछ निषेधों का पालन करते हैं तथा पारस्परिक कर्त्तव्य विषयक एक निश्चित व्यवस्था का विकास कर चुके होते हैं।''

भारत की आदिजाति को विद्वानों ने अलग–अलग नामों से संबोधित किया है। प्रसिद्ध नेतृत्व शास्त्री एच.एच. रिजले लेके, गियर्सन, सोलर्ट, टेलेट्रस, सेनविक, मार्टिन तथा भारतीय समाज सुधारक ठक्कर ने इन्हें 'आदिवासी' शब्द से संबोधित किया है।

राजस्थान के प्रायः हर क्षेत्र में जनजातीय समुदाय निवास करते हैं जो हर दृष्टि से मुख्य धारा के समाज से पीछे हैं। इन समुदायों में शिक्षा का स्तर बेहद निम्न पाया जाता है, विशेषकर महिला शिक्षा की स्थिति तो अत्यंत चिंताजनक है। अतः संविधान में इन जनजातीय समुदायों के बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा हेतु विशेष प्रावधान किये गये हैं साथ ही समय–समय पर गठित विभिन्न आयोगों तथा समितियों ने भी इस सम्बन्ध में अपनी संस्तुतियाँ प्रस्तुत की हैं।

अनेक प्रकार के वैधानिक उपायों तथा प्रयासों के बावजूद आज भी राजस्थान के जनजातीय क्षेत्रों विशेषकर दक्षिणी राजस्थान में जनजातीय बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति में आशानुरूप परिवर्तन नहीं आ पाया है। यही कारण है कि प्रस्तुत शोध आलेख में शोधार्थी द्वारा दक्षिणी राजस्थान में उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् जनजातीय बालिकाओं की वर्तमान स्थिति, समस्याओं एवं भविष्य में अवसरों का अध्ययन किया गया है।

समस्या का औचित्य

जनजाति बालिकाओं की शिक्षा वहाँ कि भौगोलिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति से अत्यधिक प्रभावित होती है। राजस्थान के जनजाति क्षेत्रों को अधिकतर पिछड़े हुए क्षेत्रों में माना जाता है। फलस्वरूप जनजाति शिक्षा का विकास अन्य दूसरे वर्गों की अपेक्षा निम्न स्तर पर हुआ है। प्रस्तुत शोध कार्य के माध्यम से जनजाति बालिकाओं की शिक्षा की वर्तमान स्थिति, समस्या एवं भविष्य में अवसरों जाना जा सकता है तथा इसके अनुरूप आवश्यक सुधार की दिशा में सार्थक कदम बढ़ाये जा सकते हैं।

समस्या अभिकथन

''दक्षिणी राजस्थान में उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् जनजातीय बालिकाओं की वर्तमान स्थिति, समस्याओं एवं भविष्य में अवसरों का अध्ययन।''

अध्ययन का उद्देश्य

1. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण तथा शहरी जनजातीय बालिकाओं की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
2. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण तथा शहरी जनजातीय बालिकाओं की समस्याओं का अध्ययन करना।
3. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण तथा शहरी जनजातीय बालिकाओं के लिए भविष्य में अवसरों का अध्ययन करना।

शून्य परिकल्पनाएँ

1. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण तथा शहरी जनजातीय बालिकाओं की वर्तमान स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण तथा शहरी जनजातीय बालिकाओं की समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण तथा शहरी जनजातीय बालिकाओं के लिए भविष्य में अवसरों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

पारिभाषिक शब्दावली

उच्च शिक्षा

प्रस्तुत शोध में उच्च शिक्षा का अर्थ स्नातक स्तर की शिक्षा से लिया गया है।

जनजातीय बालिकाएँ

जनजातीय बालिकाओं से तात्पर्य उन आदिवासी जाति की बालिकाओं से हैं जिन्हें संविधान के अनुच्छेद 342 के अंतर्गत अनुसूचित जनजाति के अंतर्गत सम्मिलित किया गया है।

वर्तमान स्थिति

इसमें जनजातीय बालिकाओं की वर्तमान पारिवारिक, शैक्षिक, आर्थिक, तथा सामाजिक स्थिति को सम्मिलित किया गया है।

समस्याएँ

इसमें जनजातीय बालिकाओं की वर्तमान पारिवारिक, शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक तथा व्यक्तिगत समस्याओं को सम्मिलित किया गया है।

भविष्य में अवसर

भविष्य में अवसर से शोधार्थी का आशय सरकार द्वारा की गई उन शैक्षिक व्यवस्थाओं तथा इनके प्रति जनजातीय बालिकाओं की जागरूकता एवं दृष्टिकोण से हैं जो उच्च शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् इन्हें उपयुक्त रोज़गार दिलवाने में सहायक सिद्ध होगा।

अध्ययन का परिसीमन

1. प्रस्तुत अध्ययन में दक्षिणी राजस्थान के जनजाति उपयोजना क्षेत्र को ही लिया गया है, क्योंकि यही राजस्थान का सर्वाधिक जनजातीय जनसंख्या वाला निवास क्षेत्र है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में दक्षिणी राजस्थान के चार जिलों– उदयपुर, डूँगरपुर, बाँसवाड़ा तथा प्रतापगढ़ को ही अध्ययन क्षेत्र में सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी ने न्यादर्श चयन हेतु उदयपुर संभाग के चार जिलों यथा–डूँगरपुर, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़ एवं उदयपुर जिले के 8 महाविद्यालयों का चयन किया गया है। प्रत्येक जिले के 2 महाविद्यालय से 80 (40 ग्रामीण एवं 40 शहरी) जनजातीय बालिकाओं का चयन करते हुए कुल 320 बालिकाओं का चयन किया गया। इसी अनुपात में 8 प्राचार्यों, 16 व्याख्याताओं एवं 32 अभिभावकों का भी चयन न्यादर्श के रूप में किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य में प्राथमिक आंकड़ों के संग्रहण हेतु पाँच स्वनिर्मित उपकरणों– प्राचार्यों, व्याख्याताओं एवं अभिभावकों के लिए साक्षात्कार अनुसूची तथा बालिकाओं के लिए व्यक्तिगत सूचना पत्रक स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया गया है। स्वयं शोधार्थी के लिए भी एक अवलोकन अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रस्तुत शोध में प्राथमिक दत्तों के गणनात्मक विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय प्रविधियों के रूप में प्रतिशत, मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

दत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त प्रक्रिया के अनुसार वर्गीकृत एवं सारणीकृत आंकड़े प्राप्त कर उनका आरेखों के माध्यम से विश्लेषण एवं व्याख्या की गई जो निम्न प्रकार से है–

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6 * ISSUE-5 * (Part-1) January- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सारणी संख्या 1
उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी जनजातीय बालिकाओं की वर्तमान स्थिति का क्षेत्रवार तुलनात्मक विश्लेषण

वर्तमान स्थिति	बालिका समूह	N	मध्यमान	मध्यमान अन्तर	मनक विचलन	'टी' मान	परिणाम
शैक्षिक	ग्रामीण	160	1.80	0.19	0.56	2.83	सार्थक (.01)
	शहरी	160	1.99		0.66		
पारिवारिक	ग्रामीण	160	5.96	0.64	2.13	2.78	सार्थक (.01)
	शहरी	160	6.59		1.97		
सामाजिक	ग्रामीण	160	9.35	2.28	3.48	5.01	सार्थक (.01)
	शहरी	160	11.63		4.59		
आर्थिक	ग्रामीण	160	9.21	0.63	2.21	2.59	सार्थक (.01)
	शहरी	160	9.84		2.14		
समग्र क्षेत्र	ग्रामीण	160	26.32	3.74	6.27	5.68	सार्थक (.01)
	शहरी	160	30.06		5.49		

आरेख संख्या 1
उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी जनजातीय बालिकाओं की वर्तमान स्थिति का क्षेत्रवार तुलनात्मक आरेखन

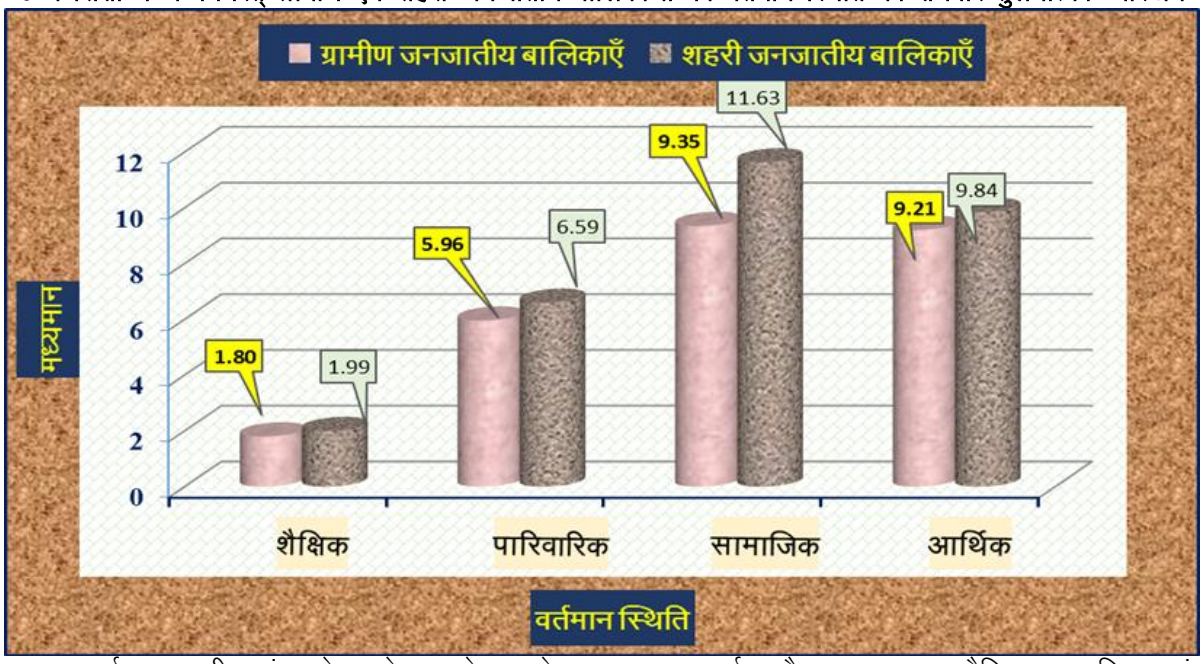

उपर्युक्त सारणी एवं आरेख के अवलोकन से स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् जनजातीय बालिकाओं की वर्तमान स्थिति के प्रथम क्षेत्र 'शैक्षिक स्थिति' के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 1.80 एवं 1.99 तथा मानक विचलन क्रमशः 0.56 एवं 0.66 प्राप्त हुए। इन आँकड़ों के मध्य संगणित टी–मान 2.83 प्राप्त हुआ, जो कि .01 सार्थकता स्तर पर निर्धारित सारणी मान 2.58 (df= 318) से अधिक है। इस आधिक्य से यह प्रमाणित होता है कि वर्तमान में उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी जनजातीय बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति से सम्बंधित मध्यमानों में जो 0.19 अंकों का अन्तर दिखाई दे रहा है, वह सार्थक है। अतः सुदृढ़ शैक्षिक पृष्ठभूमि, नामांकन स्थिति, शिक्षण–अधिगम सुविधाओं के कारण दक्षिणी राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में जनजातीय बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति बेहतर है।

इसी प्रकार द्वितीय क्षेत्र 'पारिवारिक स्थिति' के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं की वर्तमान स्थिति से सम्बन्धित आंकड़ों के मध्य संगणित टी–मान 2.83 (.01 स्तर पर सार्थक) प्राप्त हुआ जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि शिक्षित अभिभावकों के कारण दक्षिणी राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में जनजातीय बालिकाओं की पारिवारिक स्थिति बेहतर है। तृतीय क्षेत्र 'सामाजिक स्थिति' के संदर्भ में ग्रामीण एवं

शहरी बालिकाओं की वर्तमान स्थिति से सम्बन्धित आंकड़ों के मध्य संगणित टी–मान 5.01 (.01 स्तर पर सार्थक) प्राप्त हुआ जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि परिवार में सामाजिक प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाली समस्त साधन–सुविधाएँ उपलब्ध होने के कारण दक्षिणी राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में जनजातीय बालिकाओं की सामाजिक स्थिति बेहतर है।

इसी क्रम में चतुर्थ क्षेत्र 'आर्थिक स्थिति' के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं की वर्तमान स्थिति से सम्बन्धित आंकड़ों के मध्य संगणित टी–मान 2.59 (.01 स्तर पर सार्थक) प्राप्त हुआ जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि उन्नत व्यावसायिक स्थिति, उच्च पारिवारिक आय एवं उच्च प्रति व्यक्ति आय के कारण दक्षिणी राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में जनजातीय बालिकाओं की आर्थिक स्थिति बेहतर है। अंत में समग्र रूप से भी ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं की वर्तमान स्थिति से सम्बन्धित आंकड़ों के मध्य संगणित टी–मान 5.68 (.01 स्तर पर सार्थक) प्राप्त हुआ जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि सुदृढ़ शैक्षिक, पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि के कारण दक्षिणी राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में जनजातीय बालिकाओं की वर्तमान स्थिति समग्र रूप से बेहतर है।

सारणी संख्या 2

उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी जनजातीय बालिकाओं की समस्याओं का क्षेत्रवार तुलनात्मक विश्लेषण

वर्तमान स्थिति	बालिका समूह	छ	मध्यमान	मध्यमान अन्तर	मनक विचलन	'टी' मान	परिणाम
पारिवारिक	ग्रामीण	160	3.31	**0.66**	0.97	**8.37**	सार्थक (.01)
	शहरी	160	3.97		0.25		
शैक्षिक	ग्रामीण	160	6.38	**0.52**	2.45	**2.25**	सार्थक (.05)
	शहरी	160	6.90		1.57		
आर्थिक	ग्रामीण	160	2.83	**0.31**	0.96	**3.68**	सार्थक (.01)
	शहरी	160	3.14		0.48		
सामाजिक	ग्रामीण	160	3.27	**0.29**	1.21	**2.29**	सार्थक (.05)
	शहरी	160	3.56		1.03		
व्यक्तिगत	ग्रामीण	160	2.99	**0.20**	1.69	**1.23**	असार्थक (.05)
	शहरी	160	3.19		2.97		
समग्र क्षेत्र	ग्रामीण	160	18.78	**1.98**	2.97	**6.39**	सार्थक (.01)
	शहरी	160	20.76		2.56		

आरेख संख्या 2

उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी जनजातीय बालिकाओं की समस्याओं का क्षेत्रवार तुलनात्मक आरेखन

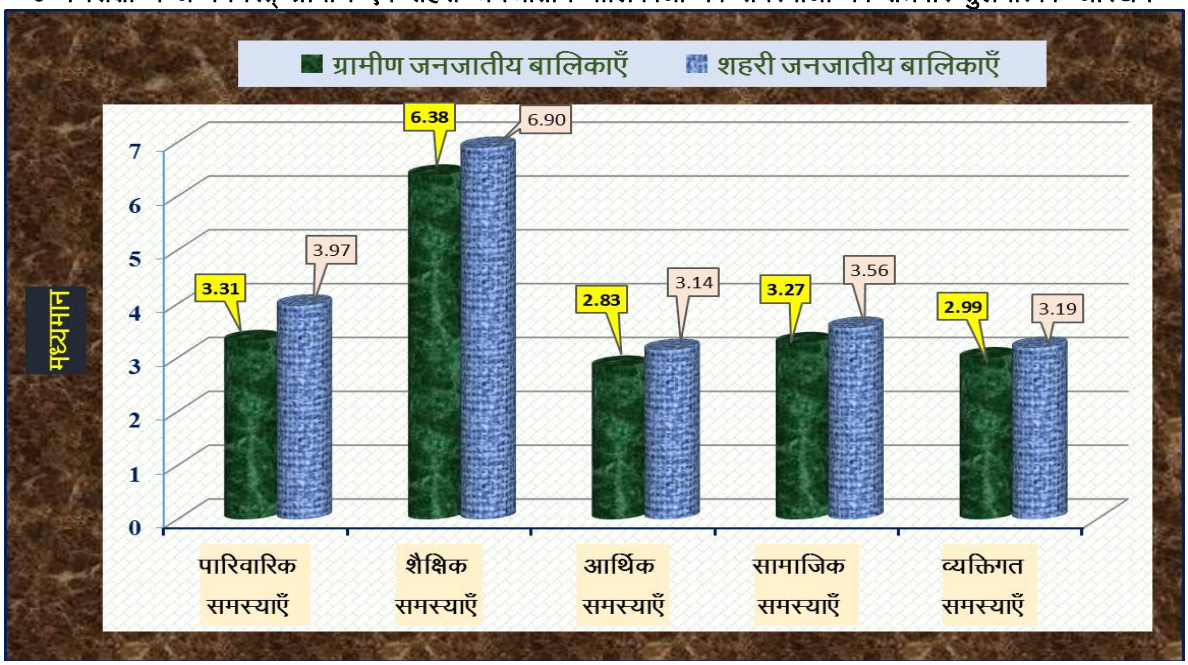

उपर्युक्त सारणी एवं आरेख के अवलोकन से स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् जनजातीय बालिकाओं की पारिवारिक समस्याओं के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 3.31 एवं 3.97 तथा मानक विचलन क्रमशः 0.97 एवं 0.25 प्राप्त हुए। इन आँकड़ों के मध्य संगणित टी–मान 8.37 प्राप्त हुआ, जो कि .01 सार्थकता स्तर पर निर्धारित सारणी मान 2.58 (df= 318) से अधिक है। इस आधिक्य से यह प्रमाणित होता है कि वर्तमान में उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी जनजातीय बालिकाओं की पारिवारिक समस्याओं से सम्बंधित मध्यमानों में जो 0.66 अंकों का अन्तर दिखाई दे रहा है, वह सार्थक है। अतः अधिकांशतया छोटे एवं एकल परिवार होने के कारण दक्षिणी राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में जनजातीय बालिकाओं को परिवार में अपेक्षाकृत कम समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसी प्रकार शैक्षिक समस्याओं के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं के आंकड़ों के मध्य संगणित टी–मान 2.25 (.05 स्तर पर सार्थक) प्राप्त हुआ जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि अधिकतर कॉलेजों में आधारभूत शैक्षिक सुविधाएँ उपलब्ध होने के कारण दक्षिणी राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में जनजातीय बालिकाओं को अपेक्षाकृत कम शैक्षिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वहीं आर्थिक समस्याओं के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं के आंकड़ों के मध्य संगणित टी–मान 3.68 (.01 स्तर पर सार्थक) प्राप्त हुआ जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि दक्षिणी राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरों में रोज़गार के अवसर अधिक होने के कारण शहरी जनजातीय बालिकाओं को अपेक्षाकृत कम आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

इसी क्रम में सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं के आंकड़ों के मध्य संगणित टी–मान 2.29 (.05 स्तर पर सार्थक) प्राप्त हुआ जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि दक्षिणी राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में समाज के आधुनिक होने से शहरी जनजातीय बालिकाओं को अपेक्षाकृत कम सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। व्यक्तिगत समस्याओं के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं के आंकड़ों के मध्य संगणित टी–मान 1. 23 (.05 स्तर पर सार्थक) प्राप्त हुआ जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि दक्षिणी राजस्थान के ग्रामीण तथा शहरी दोनों ही क्षेत्रों जनजातीय बालिकाओं को एक जैसी व्यक्तिगत समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

अंत में समग्र रूप से ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं की समस्याओं से सम्बन्धित आंकड़ों के मध्य संगणित टी–मान 6.39 (.01 स्तर पर सार्थक) प्राप्त हुआ जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि समग्र रूप से उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी जनजातीय बालिकाओं की समस्याओं में सार्थक अंतर विद्यमान है। इस प्रकार दक्षिणी राजस्थान के शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में जनजातीय बालिकाओं की समस्याएँ अधिक गंभीर हैं।

सारणी संख्या 3

उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी जनजातीय बालिकाओं के लिए भविष्य में अवसरों का तुलनात्मक विश्लेषण

बालिका समूह	N	मध्यमान	मध्यमान अन्तर	मनक विचलन	'टी' मान	परिणाम
ग्रामीण	160	0.83	0.38	0.16	15.322	सार्थक (.01)
शहरी	160	1.21		0.27		

आरेख संख्या 3

उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी जनजातीय बालिकाओं के लिए भविष्य में अवसरों का तुलनात्मक आरेखन

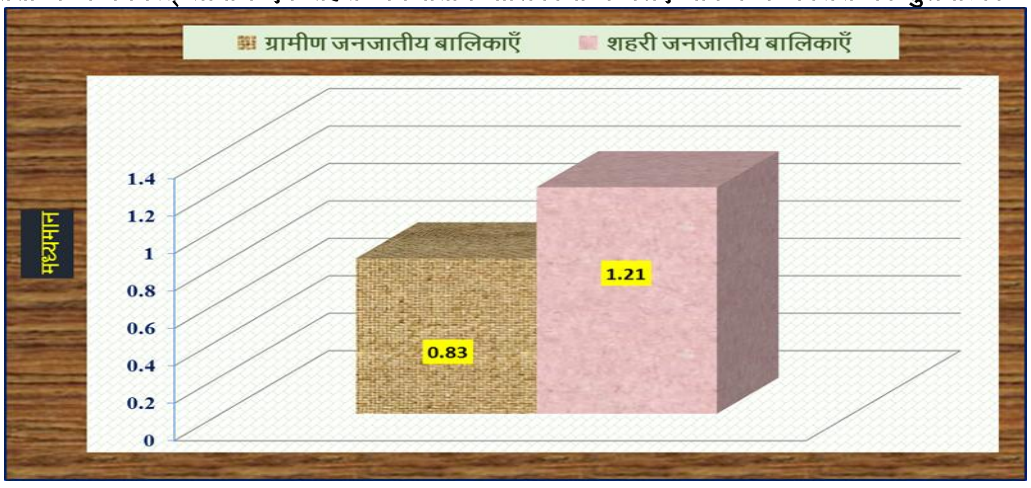

उपर्युक्त सारणी एवं आरेख के अवलोकन से स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् जनजातीय बालिकाओं के लिए भविष्य में अवसरों के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 0.83 एवं 1.21 तथा मानक विचलन क्रमशः 0.16 एवं 0.27 प्राप्त हुए। इन आँकड़ों के मध्य संगणित टी–मान 15.32 प्राप्त हुआ, जो कि .01 सार्थकता स्तर पर निर्धारित सारणी मान 2.58 (df= 318) से अधिक है। इस आधिक्य से यह प्रमाणित होता है कि वर्तमान में उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी जनजातीय बालिकाओं के लिए भविष्य में अवसरों से सम्बंधित मध्यमानों में जो 0.38 अंकों का अन्तर दिखाई दे रहा है, वह सार्थक है।ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की सरकारी एजेंसियों, स्वयंसेवी संस्थाओं तथा जनजागरूकता अधिक होने के कारण जनजातीय बालिकाओं के लिए भविष्य में अवसरों की मात्रा अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है।

विचार मंथन एवं अनुशंसाएँ

प्रस्तुत शोध से जो निष्कर्ष सामने आये हैं वे कई प्रकार की शैक्षिक समस्याओं का समाधान करने में सक्षम है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध के शैक्षिक निहितार्थों तथा अनुशंसाओं को निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट किया गया है–

1. प्रस्तुत शोध से यह स्पष्ट हुआ है कि दक्षिणी राजस्थान के शहरी क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में जनजातीय बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति बेहतर पाई गई है। अतः प्रस्तुत शोध ग्रामीण क्षेत्रों में जनजातीय बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति को बेहतर बनाने हेतु ठोस कदम उठाने जाने की अनुशंसा करता है। ये कदम कक्षा बारहवीं से ही उठाये जाने चाहिए ताकि उच्च शिक्षा में आने से पूर्व जनजातीय बालिकाओं की शैक्षिक पृष्ठभूमि को सुदृढ़ बनाया जा सके।
2. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् ग्रामीण जनजातीय बालिकाओं की नामांकन स्थिति तथा परीक्षा परिणाम भी अत्यंत निम्न पाया गया है। अतएव ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु सामाजिक स्तर पर प्रयास करने होंगे साथ ही शहरी क्षेत्रों की जनजातीय बालिकाओं के शैक्षिक प्रदर्शन को गुणात्मक दृष्टिकोण से भी बेहतर बनाने हेतु विषयगत एवं संस्थागत प्रयासों में तेजी लानी होगी।
3. महाविद्यालयों में भौतिक सुविधाओं की गुणवत्ता बेहद कम पाई गई है। अतः महाविद्यालय प्रबंधन को चाहिए कि वह इन संसाधनों की मात्रात्मक उपलब्धता के साथ–साथ इनकी उच्च कोटि की गुणवत्ता को भी सुनिश्चित करे।
4. प्रस्तुत शोध से यह बिलकुल स्पष्ट हो चुका है कि आर्थिक स्थिति शैक्षिक स्थिति को गहन तरीके से प्रभावित करती है। यही कारण है कि कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि को चलते ग्रामीण जनजातीय बालिकाओं का शैक्षिक स्तर कमजोर पाया गया है। अतः सर्वप्रथम सरकार का यह दायित्व बनता है कि वह रोजगार के अवसर उत्पन्न करे साथ ही शिक्षा के स्वरुप एवं कार्यप्रणाली को भी रोजगारपरक बनाये।
5. प्रस्तुत शोध जनजातीय बालिकाओं की अपेक्षाकृत कमजोर शैक्षिक स्थिति के लिए उनकी प्रतिकूल पारिवारिक परिस्थितियों को भी उत्तरदायी मानता है। अतः शोधार्थी इन बालिकाओं के अभिभावकों से यह अपेक्षा करती है कि वे अपनी बालिकाओं को घर पर पढ़ाई के लिए बेहतर वातावरण मुहैया करवाएंगे साथ ही उन्हें पारिवारिक जिम्मेदारियों से थोडा मुक्त रखेंगे विशेषकर परीक्षा के दिनों में।
6. पारिवारिक परिस्थितियों के साथ ही सामाजिक परिस्थितियाँ भी जनजातीय बालिकाओं के अपेक्षाकृत निम्न शैक्षिक प्रदर्शन का मुख्य कारण है। जनजातीय समाज में बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने की प्रस्तुत शोध अध्ययन अनुशंसा करता है।
7. प्रस्तुत शोध से यह भी स्पष्ट हुआ है कि जनजातीय बालिकाओं के शैक्षिक पिछड़ेपन का एक बड़ा कारण शिक्षकों के साथ खुलकर संवाद नहीं कर पाना भी है। अतः जनजातीय बालिकाओं को बिना किसी भय एवं हिचकिचाहट के अपनी समस्याएँ शिक्षकों को बतानी चाहिए ताकि वे उनका समुचित निराकरणकर सकें।
8. प्रस्तुत शोध में इस तथ्य की तरफ भी इंगित किया गया है कि महाविद्यालयों में जनजातीय बालिकाओं की विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए आवश्यक साधन–सुविधाओं का प्रबंधन नहीं किया गया है। अतः इस दिशा में विचार करते हुए महाविद्यालय प्रबंधन को संसाधनों का पुनर्गठन करना चाहिए।
9. प्रस्तुत शोध महाविद्यालय के प्राचार्यों एवं व्याख्याताओं से भी यह आशा करता है कि वे अपने यहाँ अध्ययनरत् जनजातीय बालिकाओं के लिए विशिष्ट कार्ययोजना बनाकर उसके अनुरूप कार्य करें तभी वे मुख्य धारा की बालिकाओं के समकक्ष आ पाएंगी।
10. प्रस्तुत शोध से यह तथ्य भी प्रकट हुआ है कि अधिकांश बालिकाओं के लिए उच्च शिक्षा के बाद शिक्षा तथा नर्सिंग सिर्फ दो क्षेत्र ही ऐसे विद्यमान हैं जहाँ उनके लिए भविष्य में अच्छे अवसर हैं। अन्य व्यावसायिक क्षेत्रों में अवसर उत्पन्न हो सके इसके लिए फिलहाल कोई प्रावधान नहीं किये गये हैं। अतः महाविद्यालय स्तर पर एक कॅरियर काउंसलर की नियुक्ति अनिवार्य रूप से की जानी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *अटल, योगेश एवं यतीन्द्र सिंह सिसोदिया (2011). आदिवासी भारत, नई दिल्ली रावत पब्लिकेशंस, पृ. 2*
2. *बानोथु, डॉ. बोंद्यालु. (2015)– "आदिवासी समाज और आधुनिक शिक्षारू हिड़िम्ब के सन्दर्भ में" वन्यजाति क्वावटरलि जनरल (अप्रैल,2015) वर्ष 63, अंक–2, Vol- & L-XIII*

3. *चौहान, कुमार राकेश (2008)रू "भीलाला जनजाति की सामाजिक–आर्थिक संरचना –एक वैयक्तिक अध्ययन" वन्यजाति क्वावटरलि जनरल (2008) वर्ष 58, अंक–2, Vol-&LVI*
4. *दुबे, एस.सी. (1977). ट्राईबल हेरिटेज ऑफ़ इण्डिया, नई दिल्ली : विकास पब्लिकेशन्स हाउस*
5. *गया, पांडे (2007). भारतीय जनजातीय संस्कृति, नई दिल्ली : कंसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी*
6. *गैरेट, हेनरी ई. (1989): शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, नई दिल्ली: कल्याणी पब्लिशर्स*
7. *हट्टन, जे.एच. (1938). सेन्सस रिपोर्ट ऑफ़ इण्डिया 193, वॉल्यूम–1, प्रिंट, नई दिल्ली*
8. *ट्राइब, माणिक्यलाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, पृ. 1, खण्ड 33, अंक 1–4 (2001)*
9. *उत्प्रेति, हरिश्चंद्र (1970). इण्डियन ट्राइब्स, सामाजिक विज्ञान हिंदी रचना केंद्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, पृ. 1*
10. *वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव, डी.डी.एन (1990). आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान, आगरा रू विनोद पुस्तक मंदिर, पृष्ठ–217*